रात्री क्लास ओम्शान्ति 7-10-67

मीठे2 स्थानी बच्चों लिए यह नई बात है। नई दुनिया के लिए नई बात है। शास्त्रों में यह बातें हैं नहीं। शास्त्र हैं भक्ति मार्ग की। इसको कहा जाता है फियर नो ईविल। आगे बन्दरों को दिखाते थे। होगा तो मनुष्य लिए ना। जनावर क्या जाने। अभी मनुष्यों को भी बताते है। बाबा ने एक कुमारी का चित्र बनाया था। कलेन्डर है। उसमें बहुत अच्छी लिखत हैं। हियर नो ईविल... यह किसके लिए है। मनुष्य जो 5 विकारों में हैं उनके लिए हैं। ईश्वर सर्वव्यापी है, आद कुछ कहे तो वह सुनना नहीं। बहुत पूछा बाबा के तरफ। दूखने नहीं थे कि जादू न लग जावें। बाप फिर तुमको कहते है देखते हुये न देखो। यह छी2 दुनिया है ना। रावण की पूरी है। मनुष्य सब पतित हैं। देखते हुये न देखो। तुमको अब तीसरा नेत्र मिला है। शान्ति धाम सुख धाम को देखो। अपने घर को याद करना माना देखना। यहां के जो घर है सब भूल जाओ। हे आत्मायें, हे बच्चें अपने सुखधाम और शांति धाम को याद करो। यह सब कब्रदाखिल हो जाना है। नई मकान को देखते हैं तो पुरानी से ममत्व मिट जाती है। तुम्हारा बाप बेहद के नई दुनिया से दिल जुटाते हैं। यह है बेहद का सन्यास। यह सब खतम हो जाना है। बाप को ही याद करना है। हुबहु जैसे आशुक माशुक को याद करते हैं। बाप कहते है मैं तुम्हारा माशुक हूं। वह एक दो के आशुक होते है। तुम सब मेरे आशुक हो। मैं एक माशुक हूं। वह आशुक होते हैं शरीर पर। विकार की दृष्टि नहीं जाती। यहां भी विकार की बात नहीं। साढे पांच सौ करोड आत्मायें आशुक है एक परम पिता परमात्मा के। बाप कहते हैं अभी तुम सब की वाणप्रस्त अवस्था है। तुमको वाणी से परे घर रहना है। यह ब्राहमणकुल सो विष्णु कुल बनता है। फिर क्षत्री कुल, वैश्य कुल, शुद्र कुल बनेंगा। मनुष्य यह नहीं जानते विष्णुपुरी सतयुग को ही कहा जाता है। जहां लक्ष्मी-नारायण का राज्य है। बाप कहते हैं मूल बात एक ही है कि पवित्र बनने लिए मामेकं याद करो। फिर अपवित्र बनें तो स्थानी कराये देंगे। सूक्ष्म वतन का भी सा0 होता है। वहां कोई पेठ नहीं है। तुम सम्पूर्ण बनने से फरिश्ते बनते हो। यह ब्रहमा का मनुष्य का शरीर है। सूक्ष्म वतन में हैं फरिस्ते। जिसका सा0 अभी तुमको होता है। आवेंगे तो सूक्ष्म वतन को क्रास नहीं करेंगे। सूक्ष्म वतन का सा0 अभी तुम कर सकते हो। त्रिमूर्ति मार्ग तीन मूर्तिघर भी नाम रख देते है। तुमको समझाना चाहिए। अपना फर्ज है उन से पूछना। त्रिमूर्ति मार्ग नाम रखा है यह किसका यादगार है। तुम जानते हो ना। मनुष्य कुछ भी नहीं जानते। ब्रहमा, विष्णु शंकर का भी जैसे यह यादगार है। महिमा तो एक शिव बाबा की ही होनी चाहिए। त्रिमूर्ति शिव बाबा का स्टैम्प बनाना चाहिए। तुम जाकर समझावेंगे भारत को स्वर्ग बनाने वाला बाप ही है। उनकी स्टैम्प छपनी चाहिए। तुम्हारा नाम बहुत हो जावेंगा। त्रिमूर्ति शिव ही सारे विश्व को कल्प2 स्वर्ग बनाते हैं। यह बातें सिवाय एक बाप के कोई समझाये न सके। कैसे तुमको पढाते हैं। वन्डर है ना। तुम बच्चों को नाम बाला तब होगा जब गीता की बात सिद्ध होगी। सर्व का सदगति दाता एक बाप ही है। सर्व धर्मवालों को शिव के चित्र को नमन करना पडे। बनारस में खास काशी का मंदिर है। जय शिव काशी विश्वनाथ गंगा। शिव की काशी, विश्वनाथ उसने गंगा लाई। वह भी कहते है भागीरथ द्वारा। बनारस में भी किनारे पर ढेर सन्यासि रहते हैं। समझते हैं शिव शिव कहते गंगा स्नान करेंगे तो हमारी मुक्ति हो जावेगी। फिर शिव पर बल चढने से: काशी पर करवट खाने से मुक्ति हो जावेंगी। आगे कूद पडते थे, समझते थे हम शिव बाबा पर बल चढे। बहुत देवियों पर मनुष्यों की बल चढती है। गवर्मेन्ट ने बन्द कराये दिया। बल चढने को महा प्रसाद समझते थे। ऐसे को आदम खोर कहा जाता है। हमेशा अपन को आत्मा समझ बैठो। देहाभिमान छोडो। याद न करने विकर्म विनाश न होंगे। फिर बहुत सजा खावेंगे। घडी2 शरीर छोडते सजा खाते रहेंगे। सा0 होता रहेगा सजा खाते रहेंगे। इतना सजा खाके थोडा सा पद लेना उन से क्या फायदा। विश्व के मालिक बनने की सारी खुशी उड जावेंगी। बाप कहते हैं भूलो मत। अपन को आत्मा बाप को याद करते रहो। आत्माभिमानी बन मुझे याद करते रहो। बच्चों को अब गफलत न करनी चाहिए। इस में कोई विघ्न नहीं डाल सकते।

कर्म इन्द्रियों से कर्म करते रहो। बुधि योग बाप के साथ।8 घंटा बाप की सर्विस। याद भी करना है चक्र भी फिराना है। रास्ता भी बताना है। बाप का परिचय सब के अखबारों में जावेगा। आज भी बाबा लिखा है। यह गीता का भगवान का जो चित्र है अखबार में डालो। तुम्हारी पहली2 जीत इस पर होगी। तुम अर्थाटी गाये जावेंगे। तुम से पूछेंगे किसने बताया है। लिखा हुआ है त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। त्रिमूर्ति अक्षर भी याद कर दो। ब्रहमाकुमारियों के आगे प्रजापिता भी जरूर लिखना है। तब समझेंगे ब्रहमा भी जरूर यहां होगा। सूक्ष्म वतन में तो एडाप्ट कर न सकते। ऐसी2 सब पाईन्टस धारण कर तुमको गांव2, शहर2 में सर्विस करनी है। तुम ही गाडली रूहानी वरकर्स। समझेंगे तो वही जिन्होंने कल्प पहले समझा है। मूंझने की भी बात नहीं। समझाना चाहिए सतयुग में एक ही धर्म होता है। तुम्हारे पास चित्र भी है। बड़े2 म्युजियम खुलते रहेंगे। बम्बई में भी एक्जीविशन होगी। वहां स्टाल में चित्र रखेंगे। टेऊरिस्ट को नालेज मिलेगी। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम प्युर बन जावेंगे। कब भी पूछना हो तो लिख कर पूछो। यह है अविनाशी सर्जन। अच्छा।

8-10-67:- रात्री क्लास :- तुम बच्चे अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करते हो। जिस से पदम भाग्यशाली बनते हो। नम्बरवार पद तो होती है ना। यहां भी फर्क तो है ना। तुम्हारा भी पढाई पर फर्क होगा। पुरुषार्थ करना चाहिए। अपना समय बरबाद न करना चाहिए। यह समय बहुत बहुमूल्य है। अमूल्य जीवन इसको कहा जाता है। इनको सफल करना है। कांग्रेस में सोसल वरकर्स कितने हैं। उन्हों की इज्जत है। तुम ब्राहमण भी इज्जत लायक होते रहते हो। भावनगर में भी बच्चियां अच्छी सर्विस कर रही हैं। अहमदाबाद में भी साइंस बुधी को पा रहे हैं। तुम्हारा बड़ा कालेज है, बड़ा पढाने वाला है, तो छोटे सेन्टर में राजी न होना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए बड़े सेन्टर की। बाप बैठ है। मनुष्यों को तुम्हारा पहचान तो है नहीं। बाप को जो न जानते वह हैं जंगली बुधि। शास्त्रों में भी है विनाश काले विप्रीत बुधियों की विप्रीत बुधि। लौकिक बाप को जानना, पारलौकिक बाप को न जानना तो जंगल के जनावर ठहरे। यहां आते हैं तो महसूस करते हैं। बगीचा तो सतयुग का है। यथा राजारानी तथा प्रजा है। भगवानुवाच यह है आसुरी सम्प्रदाय। जंगल में रहने वाले । बन्दर सेलदस। बन्दरों को भी सब कुछ सिखलाते हैं। बाप कहते हैं बिल्कुल मनुष्य जैसे कर्तव्य बन्दर जैसे हैं। अपने देवी-देवताओं की महिमा गाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो 5 विकारों यानी माया क्या हाल कर देती है। कितनी मातायें मार खाती हैं विकार लिए। अबलाओं पर अत्याचार का गायन है। बाप आर्डर बहुत बड़ा आर्डिनेन्स निकालते हैं। तुम्हारी है पाण्डव गवर्मेन्ट। आगे चल लिखेंगे पाण्डव गवर्मेन्ट। तुम रूहानी पण्डे हो ना। सबको रास्ता बताने वाले। यहां बैठे तुम बताते हो बाप को याद करो। ऊंच ते ऊंच भगवान। शिवायनमः। फिर ब्रहमा,विष्णु, शंकर देवताय नमः। वह बड़ा ठहरा ना। ज्ञान का सागर भी वह है। ज्ञान का सागर सुख का सागर बाप ही है। उनको ही याद करना चाहिए। पूजा भी उनकी करनी चाहिए। यहां तो सब की पूजा करते रहते हैं। समझते हैं सब में भगवान है। उनको ही चित्र है। तुम बच्चों को बाप सब समझाते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप ही है। ल0 ना0 को तुम बाप थोड़े ही कहेंगे। इनको बच्चा ही बाबा, मामा कहेंगे। इनको बेहद का वर्सा नहीं होते। भक्ति की कितनी रस्में हैं। अब तुम बच्चों को भक्ति की जंजीरों से, गुरुओं की जंजीरों से छुड़ाना पडे। भक्ति सब को नचाती है। आधा कल्प नचाती है। बाप तो नहीं नचाते है। घूमो, फिरो, खाओ। सिर्फ बाप को याद करते रहो। बाप पतित-पावन है। जब आते हैं तो कहते हैं मुझे याद करो तो पावन बन जावेंगे। कट निकल जावेगी। तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। इसमें मेहनत की तो बात नहीं। बाप आया है । बेहद का बाप हमको वर्सा देते हैं। हमको पवित्र रहना चाहिए। इन (ल0ना0) जैसा दैवी गुण वाला हमको बनना है। फिर संस्कार ले घर चले जावेंगे। फिर पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार सुखधाम में आवेंगे। बाकि तो बुद्ध है गोल्ड की रजाई। इनका प्रभाव बहुत है। तो तुम थोड़े छुप जाते हो। सारे विश्व में तुम कितने थोड़े हो। गिनती भी नहीं हो सकती। तुम जानते हो हम सु संस्कार ले जावेंगे। हमको इस जन्म में पद नहीं

पना है।तुम अभी पढ़ते हो नई दुनिया में पद पाते हो, फिर 21 जन्म चलता है।इसलिए बाबा पदम भाग्यशाली कहते हैं।तो इतनी खुशी , नशा रहनी चाहिए।चित्र(ल०ना०) हाथ में लेवालो इन्हों को यह राज्य किसने दिया। यह(ल०ना०) सतयुग के मालिक थे।उन्हों को यह वर्सा दिया किसने।अभी समझते हैं हम यह पद पाये रहे हैं।यह जानता हैं हमारी आत्मा पढ़ाई पढ़ती है।भविष्य दूसरे जन्म में यह बनेंगा।और कोई भविष्य के लिए कह न सके।यह सिर्फ एक ही बार बाप समझाते हैं।टीचर कह न सके इस पढ़ाई से तमको दूसरे जन्म में पद मिलेगा।नहीं।वह तो यहां ही दर्जा पाये लेते हैं।तुम यहां पढ़ते हो नई दुनिया में मर्तबा मिलेगा।तुम मनुष्य से पुरुषोत्तम देवी-देवता बन रहे हो।एक ही बार बाप जब आते हैंतब तुमको इतनी वड़ी समझ मिलती है।एक दो को देख पुरुषार्थ करना चाहिए समझाने का।कितनी सहज कहानी है।आओ इस लक्ष्मी-नारायण की 84 जन्मो की जीवन कहानी बतावें।यह कहानी तुम नहीं समझाये सकते हो।बंधन भी कितनी रहती है।जंजीरों से अपन को छुड़ाने देना चाहिए।कब तक बंधन बंधन करते रहेंगे।कोई न कोई युक्ति से तैयार होना चाहिए।जो किसको भी समझाये तो सके।विकार में जाने से बर्तन मांजना अच्छा है।इतना नशा होंगा तब लखपति का भी घर छोड़ की कहेंगे हम ब्रह्माकुमारियों पास बर्तन मांजेंगी। विकार में नहीं जावेंगे।हम 21 जन्म का वर्सा कौड़ी हो गमावेंगे।हिम्मत न है, महावीरता न है तो फिर कोई न कोईबंधन में लटक पड़ते हैं।और वैश्या बनने ऐसे तो बर्तन मांजना अच्छा है।बहुत है जिनको बंधन नहीं तो भी धक्का खाते रहते हैं। नहीं तो यहां भी बर्तन मांजने वाली विकारी नहीं होनी चाहिए।परंतु ऐसे कोई हैं नहीं। देहाभिमान बहुत है।यह बच्चा है गुड़गांव का।इन में जरा भी देह अभिमान नहीं है।ऐसे बच्चे अगर मिले तोबाबा उनको यही काम पर रख दे।परन्तु चाहिए ऐसे मीठे निडर। सब अलराउन्ड काम में लग जाये। बाबा कहे पोचा लगाओ। झट करने लग पड़े।यह बच्चा बड़ा अच्छा है।बाबा को इन में लव बहुत है।गरीब निवाज बाप हैं ना।तुमको सब को बाप ही पैगाम देना है।शिव बाबा भारत में आया है।यह जैसे कि शिव बाबा का गर्भ हो गया।तो जरूर सौगात ले आया होंगा। बाबा ने आकर बहिस्त,स्वर्ग,पैराडाईज़ बनाया है।सिवाय तुम बच्चों को और किसको पता नहीं। तो तुमको कितना हर्षित रहना चाहिए।सिर्फ एक बाप और वर्सा याद करो। बाप सुख का सागर प्यार का सागर है। तुमको भी ऐसा बनना पड़े।इसमें घाटे की कोई बात नहीं।बाप को देखो और घाटा से नफे में आ जावेंगे।स्वर्ग में तो जावेंगा ना। वह कोई कम है क्या।कहते हैं सिर्फ भारतवासी ही स्वर्गवासी बनेंगे।और यह अनादी बना बनाया ड्रामा है।नया कुछ बनना बन है।कुछ एड न होना है।आगे तो कुछ भी पता नहीं था मैं आत्मा हूं। अपन को भूल 5 तत्व के शरीर को मैं2 करता रहता था।अब बाप ने समझाया हैतुम आत्मा हो। बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप समझाते हैं सर्वशक्तिवान मैं हूं।तो 5 विकारो बी रावण भी है।सारी सृष्टि पर इनका राज्य था। बाप फिर आकर तुमको विश्व का राज्य देते हैं।

→ रात्री क्लास:- 9-10-67 :- बच्चे जो लिटरेचर छपाते हैं और चित्र छपते, छपवाते हैं उनको एक तो यह डैरेक्शन है ब्रह्माकुमारियो के आगे प्रजापिता जरूर लिखना है।अगर स्पेस न हो तो पी.पी.भी लिखना है। क्योंकि आज कल ब्रहमा नाम वाले बच्चे और बच्चियां बहुत हैं।पी.पी. लिखने से सिध होंगा। प्रजापिता के कुमार-कुमारियां है।प्रजापिता हैं तो जरूर बहन भाई होंगे।यह डैरेक्शन भूलना न है।बाबाने यह भी समझाया है संगम युग के आगे पुरुषोत्तम अक्षर जरूर लिखना है।भूलना न है।और सिर्फ शिव नहीं लिखना है। त्रिमूर्ति शिवलिखना है। परम पिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव।या त्रिमूर्ति शिव बाबा।क्योंकि यह हैबहुत सहज ज्ञान।परंतु बच्चे भी ड्रामा अनुसार बिलकुल ही तमोप्रधान बन जाते हैं।कुछ भी बुद्धि समझती नहीं है। शिव जयन्ती माना भारत में शिव आये है।अब शिव जयंती भी मनाते हैं कृष्ण जन्माष्टमी भी मनाते हैं। दोनो का टाईम देते हैं रात का।कृष्ण का टाईम आद देते है।शिव रात्री कहते हैं।शिव रात्री कहने से जैसे

कि शिव परमात्मा आता नहीं है, कोई नाम रूप में प्रवेश नहीं करते हैं। बच्चों को समझाया जाता है शिव बाबा आते हैं जरूर। कहते हैं भाग्यशाली रथ में आते हैं। कृष्ण के लिए तो ऐसे कहते नहीं है। वह तो जन्म लेते हैं। परन्तु वह है योग बल का जन्म। रात्री माना ही कल्प का अंत। जिसको ब्रह्मा की रात्री कहा जाता है। आधा कल्प रात आधा कल्प दिन। अर्थात कलयुग, सतयुग का संगम। उनको ब्रह्मा की रात कहा जाता है। ज्ञान और भक्ति। भक्ति में धक्के खाने होते हैं। रात को मनुष्य धक्के खाते हैं। तो पहले यह बताओ शिव जयन्ती है तो जरूर शिव आते हैं। उनको अवतरण है। शिव बाबा आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। भारतवासी ही स्वर्गवासी थे। इनका राज्य था। अभी तो राज्य है नहीं। है भी कलयुग। कहते हैं 40 हजार वर्ष है। समझाया जाता है महाभारत लड़ाई सामने खड़ा है इन से पुरानी दुनिया का विनाश होना है। राजयोग सिख रहे हैं। विनाश है ही स्वर्ग की स्थापना अर्थ। ऐसी2 पाईन्ट्स धारण करनी चाहिए। बच्चों को मुल बात यह सिध करनी है गीता का भगवान शिव है। प्रजापिता ब्रह्मा का दिन तो प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे का भी दिन। मुख्य तुम्हारी विजय होनी है इस बात पर। गीता का भगवान त्रिमूर्ति शिव है न कि श्री कृष्ण। कृष्ण को तो देवता ही समझते हैं। बच्चों को यह पता नहीं है विष्णु के दो रूप ही लक्ष्मी नारायण हैं। ऐसी2 बातें अच्छी रीत धारण करनी है। जिस से समझाने में सहज होगा। शिव बाबा आते हैं वह पतित पावन है, जरूर पावन दुनिया रचते होंगे। राजयोग सिखाते होंगे। कृष्ण लिए तो नहीं कहा जाता। पतित पावन ही राजयोग सिखाता है। कृष्ण तो पतित पावन है नहीं। ऐसी2 मुख्य बातें बुधि में रखनी होती है। इस समय भक्ति की जैसे बादशाही है। भक्ति की अथवा भक्ति के शास्त्रों की अथार्टी बन जाते हैं। सतयुग में शास्त्र होती नहीं। यह है ही भक्ति मार्ग की। ज्ञान से दिन होता है। वहां भक्ति का नाम निशान नहीं। यह ड्रामा है ना। तो बच्चों को नोट करना चाहिए। तुम्हारी विजय है ही इस में गीता का भगवान कौन है। रात-दिन का फर्क है। कृष्ण तो पुरे 84 जन्म लेते हैं। अब भी उनकी आत्मा पुरुषार्थ कर रही है। यह तुम बच्चे ही समझते हो। बाप ने समझाया है जिस ने शुरू से भक्ति की है वह ही निकलेंगे। अच्छी रीत पढ़ने का शौक है। एक दिन भी मुरली मिस न करनी चाहिए। नहीं तो जैसे कि अबसेन्ट पड़ जाता है। कोई को पक्का निश्चय होता है कोई संशयी होते हैं। तो समझा जाता है शुरू से भक्ति न की है। मोस्ट बिलवेड बाप है जिस से वर्सा मिलता है। निश्चय है तो एक सेकण्ड भी ठहर न सके। बस हमको बाप से मिलना है। बाबा को चटक लगी तो देखा विनाश होता है में यह बनता हूं। फट से छोड़ दिया। इनका पार्ट था पहले नम्बर का। निश्चय से बहुत खुशी होती है। पैसे से शरीर निर्वाह तो चलता है। भुख कोई नहीं मर सकते। सब खाते-पीते रहते हैं। बाप पास पैसे भी थे मम्मा पास कुछ भी नहीं। तभी भी योग बल का कितना बल है। ड्रामा ऐसा है विचार सागर मथन करना होता है। बाबा के खजाने में कल्प पहले भी मदद की है। जिन्हों ने जो कुछ मदद कल्प पहले की है वह जरूर करेंगे। फिक्रात की बात ही नहीं। अनेक बार हमने यह चक्र लगाया है। अब वापस जाना है। खुशी होनी चाहिए ना। तुम बच्चे ही जानते हो। शास्त्रों में भी नहीं है परम पिता परमात्मा वरदान देते हैं। रावण श्राप देती है। दोनों का आधा2 कल्प मिलता है। बच्चों को समझाया जाता है रावण भी सर्वशक्तिवान है। जो कहते हैं परम्परा से जलाते आये हैं। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। बाप की याद से ही सतोप्रधान बनना है। तो बहुत अच्छा पुरुषार्थ करना है। श्वास पर भरोसा नहीं है। सुस्ती नहीं। मुरली भी पढ़नी है। नहीं तो रजिस्टर खराब हो जावेगा। बाबा अच्छी2 पाईन्ट्स समझाते रहते हैं। दिल होती है ऐसे2 हम भी समझावें। जो तीर लग जावे। दिन प्रति दिन नई पाईन्ट्स निकलती रहती हैं। जब तक तुम कर्मातीत अवस्था को पहुंचो। तुम देखते जावेंगे विनाश की भी तैयार हो रही हैं। तुम जानते हो ड्रामा में याक्ति है विश्व की बादशाही मिलने की। तुम समझाते हो बाबा हमारे पढ़ाते हैं। याद से बहुत खुशी होगी। कट निकलेगी। जितना तुम याद में रहेंगे उतना खुशी होगी। योग में जो नहीं रहते तो बाप के साथ इतना लव नहीं। तुम्हारा तो बहुत लव रहना चाहिए। ओम।